# "स्टेविया"

## की व्यावसायिक खेती

### चीनी का नैसर्गिक विकल्प

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

## परिचय

स्टीविया को भारत के विभिन्न भागों में अनेक नामों से पुकारा जाता है। इसके सबसे लोकप्रिय नाम "मीठी तुलसी" और "मीठी पत्ती" हैं। हिंदी में स्टीविया को 'मधु पत्रिका' कहा जाता है। लेकिन ज्यादातर जगहों पर इसे आम तौर पर "मीठी तुलसी" के नाम से जाना जाता है क्योंकि कद, पत्ती के आकार और अन्य भौतिक गुणों में तुलसी के पौधे से इसकी अनोखी समानता होती है।

सिर्फ भारत में ही नहीं, दुनिया भर में डायबिटीज के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इस वजह से शुगर को कंट्रोल करने वाली चीजों और उसके प्राकृतिक विकल्प की मांग भी तेजी से बढ़ी है। चीनी के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जाने वाला स्टीविया एक ऐसा ही पौधा है। प्रदूषण और कई गंभीर बीमारियों से बचने के लिए भारत में नेचुरल प्रोडक्ट (Natural Products) और मेडिसिन का बाजार लगातार तेजी से बढ़ रहा है। मेडिसिनल प्लांट की खेती (Farming Of Medicinal Plants) में कम लागत से लंबे समय तक कमाई सुनिश्चित होती है।

भारतीय कृषि-विश्वविद्यालय के शोध में ये बात सामने आयी है कि स्टीविया या मधुपत्र की पत्तियों में प्रोटीन और फाइबर अधिक मात्रा में होता है। कैल्शियम और फास्फोरस से भरपूर होने के साथ इन पत्तियों में कई तरह के खनिज भी होते हैं। इसलिए इनका उपयोग डायबिटीज (मधुमेह) रोगियों के लिए किया जाता है। इसके अलावा मछलियों के भोजन तथा सौंदर्य प्रसाधन व दवा कंपनियों में बड़े पैमाने पर स्टीविया की पत्तियों की मांग होती है।

सरकार स्टीविया की खेती को बढ़ावा देने के लिए 20 फीसदी सब्सिडी दे रही है। किसानों को इसके लिए जागरूक भी किया जा रहा है। यह स्वास्थ्य के अलावा आर्थिक रूप से भी फायदेमंद है।

CLICK-N-GROW
Farmer's e-Buddy

## स्टीविया की औषधीय उपयोगिता

हाल ही के वर्षों में व्यवसायिक एवं औषधीय जगत में अत्याधिक महत्व अर्जित करने वाले पौधे स्टीविया की उपयोगिता इसमें पाए जाने वाले मिठास के गुण के कारण हैं। सामान्य शक्कर से 25-30 गुणा अधिक मीठा होने के साथ-साथ स्टीविया की विशेषता यह भी है की यह पूर्णताः कैलोरी रहित है, जिसकी वजह से मधुमेह के रोगियों के लिए शक्कर के रूप में इसका उपयोग पूर्णताः सुरक्षित है। इसके साथ-साथ ऐसे व्यक्ति जो कैलोरी कॉन्सियस हैं तथा जो अपना वजन बढ़ने के प्रति काफी सचेत रहते हैं, उनके लिए भी इसका उपयोग सुरक्षित है। क्योंकि वर्तमान में प्रयुक्त हो रहे विभिन्न स्वीटनर्स मानव मात्र के लिए पूर्णताः सुरक्षित नहीं है। अतः ऐसे में स्टीविया जो एक पूर्णताः हर्बल उत्पाद है तथा सभी प्रकार के साईड इफेक्ट्स से मुक्त है, शक्कर का एक उपयुक्त प्रभावी विकल्प बनता जा रहा है। वर्तमान में विभिन्न पूर्वी देशों जैसे जापान तथा कोरिया आदि में स्वीटनर्स के 40% मार्केट पर स्टीविया एक्सट्रैक्ट का आधिपत्य हो चुका है जिसमें निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही हैं।

यह उच्च रक्त चाप तथा रक्त शर्करा का भी नियमितिकरण करता है, इससे चर्म विकारों से भी मुक्ति मिलती है, यह एंटी वायरल तथा एंटी बैक्टीरियल भी है तथा दांतों एवं मसूड़ों की बीमारियों से भी मुक्ति दिलाता है। इस प्रकार देखा जा सकता है कि स्टीविया काफी अधिक औषधीय एवं व्यवसायिक महत्व का पौधा है जिसका व्यापक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार हो सकता है।

## स्टीविया के पत्तों का प्रयोग

**i. चाकलेट और टॉफी:**
चाकलेट और टॉफी में अगर स्टीविया चूर्ण का प्रयोग किया जाए तो यह दाँतों की हानिकारक सुक्ष्माणुओं से सुरक्षा प्रदान कर सकता है ।

**ii. मधुमेह रोगियों हेतु:**
मधुमेह रोगियों के खाद्य में रेशेदार पदार्थ व प्रोटीन पर विशेष बल दिया जाता है। यदि इससे स्टीविया का चूर्ण मिला लिया जाए तो यह न केवल इनकी प्राकृतिक मिठास बढाएगा बल्कि अग्नाशय ग्रंथि को भी दुरुस्त करने में मदद करेगा। ऐसा इसलिए की इसमें इंसुलिन को नियंत्रित करने की अद्भुत क्षमता है।

**iii. भोज्य पदार्थ के परिरक्षण हेतु:**
स्टीविया चूर्ण को भोज्य पदार्थ में मिलाने से उसको अधिक दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है, क्योंकि इनमें किण्वन नहीं हो पाता ।

**iv. टॉनिक के रूप में:**
स्टीविया से बने पेय पदार्थ, दवा टॉनिक के रूप में कार्य करते हैं क्योंकि शरीर के लिए आवश्यक सभी तत्व जैसे प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस आदि इसमें उपलब्ध हैं ।

**v. औषधीय रूप में:**
अपच की दशा में स्टीविया की कोमल पत्ती को चाय की तरह प्रयोग करने से आराम मिलता है । घाव, घाव का धब्बा, खरोच तथा कटे हुए भाग को शीघ्र भरने के लिए भी उपयोगी है । उच्च रक्त चाप को कम करने के अतिरिक्त शारीरिक तापमान को कम या ज्यादा को भी सामान्य (बफर) बनाये रखता है ।

**vi. अन्य उपयोग:**
इसे सैक्रिन, एस्परटम, एसेसल्फेम-के, आदि के बेहतर विकल्प के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है । इससे प्राप्त स्टीरिओसाइड 100० सें. जैसे अधिक तापमान और 3.9 पी एच पर भी स्थिर रहता है । इसका प्रयोग जिब्रेलिक एसिड के उत्पादन में भी किया जाता है। यह कैलोरी मुक्त चीनी भी है। इसलिए इसे 'उच्च गुणवत्ता वाले कैलोरी मुक्त जैव-मिठास' का नाम भी दिया जाता है।

## खेती की विधि

स्टीविया भारतवर्ष में कृषिकरण के लिए अपेक्षाकृत नया पौधा है। तथा इसकी बड़े स्तर पर खेती अभी तक मुख्यतः कर्नाटका तथा महाराष्ट्र राज्यों तक ही सीमित है। इसके साथ-साथ अभी तक यह समझा जाता था कि यह पौधा ज्यादा ठंडी तथा ज्यादा गर्म (10 अंश से नीचे तथा 41 अंश के ऊपर) जलवायु सहन नहीं कर सकता तथा केवल नेट हाउस में नही सफल हो सकता है, परन्तु हाल में ही मे इसकी कुछ नयी प्रजातियों ने इस अवधारणा को गलत सिद्ध कर दिया है तथा अब इसकी खेती देश के विभिन्न भागों में सफलतापूर्वक की जाने लगी है। मध्यप्रदेश के साथ-साथ कई अन्य राज्यों जैसे पंजाब, हरियाणा तथा उत्तरप्रदेश आदि में भी इसकी खेती प्रारंभ हो चुकी है जिनके परिणामों के आधार पर इसकी कृषि तकनीक को निम्नानुसार देखा जा सकता है।

## जलवायु

उन क्षेत्रों को छोड़कर जहाँ का न्यूनतम तापक्रम शीत ऋतु में 9-10 अंश के नीचे चला जाता है, स्टीविया लगभग सभी क्षेत्रों में अपनाया जा सकता है। ग्रीष्म ऋतु में होने वाला उच्च तापमान(45 अंश के ऊपर) इस पौधे पर प्रभाव तो डाल सकता है, तथा पौधे की वृद्धि रुक जाती है। परन्तु यदि पहले से ही व्यवस्था कर ली जाए तथा स्टीविया की वही वेराइटी लगाईं जाए जो उच्च तापक्रम में सफलतापूर्वक उगाई जा सके तथा पौधों को तेज गर्मी से बचाने के लिए इनका रोपण मक्की अथवा मोरिंगा, आमला आदि के पौधों के बीच में किया जाए तो ज्यादा तापक्रम का प्रभाव नहीं होगा। कई किसान इस प्रकार का तापमान मेंटेन करने की दृष्टि से पॉलीहॉउस अथवा ग्रीन हाउस/नेट हाउस का उपयोग भी करते हैं।

स्टीविया ज्यादा छाया पसंद पौधा नहीं है। अतः इसे खुले में ही लगाया जाना चाहिए। क्योंकि ज्यादा छाया/शेड होने से पौधों का विकास बाधित होता है, तथा उनका स्टिवियोसाइड तत्व भी प्रभावित होता है। इसी प्रकार जब सर्दीयों में तापक्रम 7-8 अंश से नीचे चला जाता है तब पौधे की जड़े ठीक से खाद्य पदार्थों का अवशोषण नहीं कर पाती जिससे उनकी वृद्धि प्रभावित होती है। दोनों ही स्थितियों में (ज्यादा तापक्रम की स्थिति में भी तथा तापक्रम कम होने की स्थिति में भी) सिंचाई के अंतराल घटा दिए जाने चाहिए। इस प्रकार 10 से 45 अंश तक की जलवायु में तो स्टीविया बिना किसी बाधा के सफलतापूर्वक वृद्धि करता है। परन्तु यदि तापक्रम इससे कम या ज्यादा हो तो उसे मेंटेन करने हेतु उचित व्यवस्था करनी आवश्यक होगी।

## मिट्टी की उपयुक्तता

स्टीविया के पौधे ऐसी मिट्टी में सर्वाधिक सफलतापूर्वक पनपते है, जो नर्म हों, ज्यादा चिकनी न हो, जिसमें जीवाश्म की मात्रा काफी अधिक हो, तथा जिसमें पानी ज्यादा देर तक रुकता न हो। ज्यादा चिकनी तथा भारी मिट्टियाँ इसके लिए उपयुक्त नहीं है। प्रायः रेतीली दोमट मिट्टियाँ, हल्की तथा लाल मिट्टियाँ जिनका पीएच 6 से 8 के बीच हो, इसकी खेती के लिए उपयुक्त होगी।

## सिंचाई की आवश्यकता

स्टीविया को वर्ष भर पानी की आवश्यकता होती है। पानी अच्छी गुणवत्ता का होना चाहिए जिसकी इलेक्ट्रिकल कंडक्टिविटी निर्धारित मापदंडों के अनुकूल हों। यथासंभव सिंचाई की व्यवस्था ड्रिप विधि से की जानी चाहिए। क्योंकि स्प्रिंकलर पद्धति से पानी देने में फसल पर विभिन्न कीटाणुओं के प्रकोप की संभावना बढ़ सकती है।

## स्टीविया की प्रमुख प्रजातियाँ

विश्व भर में स्टीविया की लगभग 90 प्रजातियाँ विकसित की गई है। जो की संबंधित क्षेत्रों की जलवायु के अनुकूल विकसित की गई है। ऐसा पाया गया है कि विशेष रूप में दक्षिणी भारत में ऐसी भी प्रजातियां है जिनमें स्टीवियोसाइड की प्रतिशत मात्रा 3.5% ही पायी गई है। क्योंकि स्टिवियोसाइड की मात्रा पर ही स्टीविया का मूल्य निर्धारण होता है। अतः ऐसी प्रजाति की ही कृषि की जानी चाहिए जिसमें स्टिवियोसाइड की मात्रा ज्यादा से ज्यादा हो तथा जो अपने क्षेत्र की जलवायु के भी अनुरूप हो। वर्तमान में कृषिकरण की दृष्टि से स्टीविया की मुख्यतः निम्न प्रजातियाँ प्रचलन में है।

- ST-13, ST-19, ST-20, ST-22
- MORITA- मोरिटा- 1, 2, 3
- SRB- एस.आर.बी- 123, 512, 125

## उपयुक्त पौध समाग्री का चयन

स्टीविया के व्यवसायिक कृषिकरण की दृष्टि से यह आवश्यक है, कि ऐसी उपयुक्त प्रजाति का ही चयन किया जाए जो संबंधित क्षेत्र की जलवायु के अनुकूल हो।
क्योंकि कौन सी प्रजाति किस क्षेत्र के लिए ज्यादा अनुकूल होगी तथा किसमें कितना ग्लुकोसाइड कंटेंट होगा ये इस बात पर निर्भर करेगा कि आपने कौन से प्रजाति लगाई है, अतः प्रजाति का चयन सोच समझ कर किया जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित सावधानियां रखी जाना अपेक्षित होगा।

## पौध रोपण पूर्व रखी जाने वाली सावधानियां

स्टीविया के पौधे खरीदने से पूर्व किसानों द्वारा निम्नलिखित बिन्दुओं पर गौर किया जाना अनिवार्य होगा-

- क्या आपके पौधे टिश्यु कल्चर विधि से तैयार किए गये हैं? टिश्यु कल्चर विधि से तैयार पौधे निःसंदेह उत्तम होते हैं।
- स्टीविया की जो वेरायटी आप ले रहे हैं क्या यह आपकी जलवायु के अनुकूल है?
- आपके द्वारा ली गई वेरायटी मे स्टीवियासाइड की मात्रा कितनी है?

खेत की अच्छे प्रकार से तैयारी करना आवश्यक होता है। इसके लिए सर्वप्रथम खेत की अच्छी प्रकार गहरी जुताई करके उसमें जैविक खाद मिला दी जाती है। खेत भूमि जनित रोगों तथा दीमक आदि से सुरक्षित रहे इस दृष्टि से प्रति एकड़ 150 से 200 किलोग्राम नीम की पिसी हुई खल्ली भी खेत तैयार करते समय खेत में मिला दी जाती है।

Farmer's e-Buddy

**मेढ़/ बेड पर रोपण-** स्टीविया का रोपण मेड़ो / बेड्स पर किया जाता है। मेढे बनाना विशेष रूप में इसलिए भी आवश्यक होता है, ताकि वर्षा की स्थिति में अथवा सिंचाई करते समय पानी नालियों में से होते हुए निकल जाए तथा जल भराव की स्थिति न बने। जड़ों के विकास की दृष्टि से भी मेढे / बेड्स बनाना उपयुक्त रहता है। इस दृष्टि से खेत में 1 से 1.5 फीट ऊँची मेढे बनाई जाती है। इन मेढ़ों की चौड़ाई लगभग 2 फीट रखी जाती है। मेढे बना लेने के उपरान्त इन पर स्टीविया के पौध का रोपण किया जाता है। इस उद्देश्य से स्टीविया की टिश्युकल्चर विधि से तैयार की हुई पौध प्राप्त करके पौधे से पौधे के मध्य 15 से 20 सेमी तथा क़तर के बिच १ फ़ीट दूरी रखते हुए रोपण कर दिया जाता है ताकि यह रोपण करते समय मेढ़ के दोनों तरफ फैल सकें। इस प्रकार एक एकड़ में स्टीविया के लगभग 30000पौधे रोपित किये जाते हैं।

**समतल जमीन पर रोपण-** स्टीविया समतल जमीन पर भी लगाया जाता है। यह विधी बेड रोपण विधि की तुलना में आसान होती होती है और यह विधि कम समय वाले रोपण के लिए की जाती है, इस विधि में बेड विधि की तुलना में समतल तैयार जमीन पर पौधों की संख्या ज्यादा होती है।

## पौध लगाने का समय-

जहाँ तक स्टीविया के रोपण के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय का प्रश्न है, तो ज्यादा गर्मी तथा ज्यादा सर्दी के समय को छोड़ कर इसकी रोपाई कभी भी की जा सकती है। इस प्रकार उत्तरी भारत के सन्दर्भ में दिसम्बर-जनवरी एवं अप्रैल-मई को छोड़ कर इसकी रोपाई कभी भी की जा सकती है। वैसे इसकी रोपाई के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माह है सितम्बर से नवम्बर तथा फरवरी से अप्रैल।

## सिंचाई की व्यवस्था-

स्टीविया की फसल को वर्ष भर निरंतर सिंचाई की आवश्यकता होती है। यूँ तो सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर्स का उपयोग भी किया जा सकता है परन्तु स्टीविया के ली सिंचाई का सर्वोत्तम माध्यम है ड्रिप विधि। अतः यथासंभव स्टीविया की सिंचाई हेतु ड्रिप विधि का ही उपयोग किया जाना चाहिए।

## खरपतवार नियंत्रण तथा निराई -गुड़ाई-

स्टीविया की फसल की निरंतर सफाई करते रहना चाहिए तथा जब भी किसी प्रकार के खरपतवार फसल में उन्हें उखाड़ दिया जाना चाहिए। नियमित अंतरालों पर खेत की निराई-गुड़ाई भी करते रहना चाहिए। जिससे जमीन की नमी बनी रहे। खरपतवार नियंत्रण का कार्य हाथ से ही किया जाना चाहिए तथा इस हेतु किसी प्रकार के रासायनिक खरपतवार नाशी का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

## खाद एवं अन्य पोषक तत्वों की आवश्यकता-

एक निरंतर वृद्धि करनेवाली फसल होने के कारण स्टीविया को काफी अधिक मात्रा में पोषक तत्वों की आवश्यकता होती ही। खेत तैयार करते समय डाली जाने वाले खाद के साथ-साथ प्रत्येक कटाई के उपरांत 500 किलोग्राम केंचुआ खाद तथा 30 किलोग्राम प्रॉम जैविक खाद पौधों के पास-पास डाल दी जानी चाहिए। क्योंकि स्टीविया ग्रहण की जाने वाली वनस्पति है अतः यथा संभव फसल में किसी भी प्रकार के रासायनिक खादों अथवा टॉनिकों का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

## फसल पर होने वाले प्रमुख रोग तथा उनका नियंत्रण-

यू तो स्टीविया पर अधिकांशता किसी विशेष रोग अथवा कीट का प्रकोप नहीं देखा गया है, परन्तु काई बार भूमि में बोरोन तत्व की कमी के कारण लीफ स्पॉट का प्रकोप हो सकता है। इसके निदान हेतु 6% बोरेक्स का छिड़काव् किया जा सकता है। वैसे नियमित अंतरालों पर गौमूत्र अथवा नीम के तेल को पानी में मिश्रित करके उसका छिड़काव् करने से फसल पूर्णताः रोगों अथवा कीटों/कृमियों से मुक्त रहती है। यह ध्यान रखा जाना चाहिए की रोग नियंत्रण हेतु किसी प्रकार के रासायनिक कीटनाशक का उपयोग न किया जाए। क्योंकि स्टीविया सीधे मानव उपयोग की वस्तु है अतः कीट व्याधि आने से पूर्व ही उसे रोकने हेतु प्रभावी कदम उठा लिए जाने चाहिए जिसके लिए एक सावधानीपूर्वक कदम (प्रीकोशनरी मेजर) के रूप में नियमित अंतरालों पर गौमूत्र का स्प्रे किया जाना एक अच्छा कदम हो सकता है।

## फसल की कटाई-

रोपण के लगभग चार माह के उपरान्त स्टीविया की फसल प्रथम कटाई के लिए तैयार हो जाती है। कटाई का कार्य पौधों पर फूल आने के पूर्व ही कर लिया जाना चाहिए क्योंकि फूल आ जाने से पौधे में स्टिवियोसाइड की मात्रा घटने लगती है जिससे इसका उचित मूल्य नहीं मिल पाता। इस प्रकार प्रथम कटाई चार माह के उपरान्त तथा आगे की कटाइयाँ प्रत्येक 2.5-3 माह में आने लगती है। कटाई चाहे पहली हो अथवा दूसरी अथवा तीसरी, यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि किसी भी स्थिति में कटाई का कार्य पौधे पर फूल आने के पूर्व ही हो जाए। कटाई करने की दृष्टि से पूरे पौधे को भी काटा जा सकता है तथा पत्तों को भी चुना जा सकता है। पूरा पौधा काट लेने के उपरान्त भी उसके पत्ते तोड़े जा सकता है। पत्तों को तोड़ लेने के उपरान्त उन्हें छाया में सुखाया जाना चाहिए। प्रायः 3-4 रोज तक छाया में सुखा लिए जाने पर पत्ते पूर्णतः नमी रहित हो जाते हैं तथा तदुपरान्त इन्हें बोरो में पैक करके बिक्री हेतु प्रस्तुत कर दिया जाता है।

## भारत सरकार की सब्सिडी-

स्टीविया के बाजार में लगभग 1000 करोड़ रुपए की और बढ़ोतरी होने का अनुमान है। इसे देखते हुए नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड (एनएमपीबी) ने किसानों को स्टीविया की खेती पर 20-30 फीसदी सब्सिडी देने की घोषणा की है। भारतीय कृषि विश्वविद्यालय के शोध में ये बात सामने आयी है कि स्टीविया की पत्तियों में प्रोटीन व फाइबर अधिक मात्रा में होता है। कैल्शियम व फास्फोरस से भरपूर होने के साथ इन पत्तियों में कई तरह के खनिज भी होते हैं। इसलिए इनका उपयोग मधुमेह रोगियों के लिए किया जाता है। इसके अलावा मछलियों के भोजन और सौंदर्य प्रसाधन व दवा कंपनियों में बड़े पैमाने पर इन पत्तियों की मांग होती है।

## खाद्य प्रसंसकरण उद्योगों की स्थापना के लिए भी खुलेंगे रास्ते

मधुमेह के रोगियों के लिए वरदान माने जाने वाले पौधे स्टीविया का तत्व स्टीवियोसाइड केलोरी रहित, विष रहित मीठा यौगिक है। यह शरीर में चीनी की तरह दुष्प्रभाव नहीं डालता। यह मधुमेह, हृदय रोग और मोटापे में लाभदायक है। यह स्वाद बढ़ाने वाली हर्बल चाय और फार्मास्युटिकल, खाद्य एवं पेय में इसका उपयोग बढ़ रहा है। राज्य में इसकी खेती कर क्षेत्र बढ़ने से नए खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की स्थापना के लिए भी रास्ते खुलेंगे।

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

# प्रति एकर कुल खर्चे- 5 साल

| क्र. | ब्योरे | कार्य | खर्चे |
|---|---|---|---|
| 1 | **जमीन तैयार करना** | जुताई, समतल करना इ. | 4,000 |
| 2 | **जैविक खाद** | जैविक खाद, कीटनाशक, फफूंदीनाशक, ग्रोथ बूस्टर, ई. | 20,000 |
| 3 | **स्टेविया पौधे (टिश्यू कल्चर किस्म- (ST-13, ST-19, ST-20, ST-22)** | 35000 पौधे x रु.4.5 प्रति पौध = | 1,57,000 |
| 4 | **बुवाई** | पौध की बुवाई | 4,000 |
| 5 | **बिजली का बिल** | सिंचाई के लिए | 5,000 |
| 6 | **निंदाई/ गुड़ाई** | खरपतवार निकालना | 30,000 |
| 7 | **कटाई** | पत्तो की कटाई | 20,000 |
| 8 | **शेड नेट** | कटाई किये हुए पत्तो को सुखाने के लिए | 5,000 |
| 9 | **पैकिंग** | सूखे पत्तो की पैकिंग करने हेतु | 3,000 |
| 10 | **मैंटनेंस** | अधिक के कामों के लिए खर्चे | 5,000 |
| 11 | **परिवहन खर्च** | पौध, खाद और उत्पाद के लिए लगने वाला परिवहन खर्च | 20,000 |
| | **कुल खर्चे प्रति एकड़** | | **Rs. 273,000/-** |

# प्रति एकर कुल आय- 5 साल

| उत्पादन का ब्योरा | उत्पादन का विवरण | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **सूखे पत्ते (प्रति वर्ष)** | 2000 किलो | 2500 किलो | 3000 किलो | 3000 किलो | 3000 किलो |
| **बाय-बॅक कीमत प्रति किलो** | रु.100 प्रति किलो | रु.100 प्रति किलो | रु.100 प्रति किलो | रु.100 प्रति किलो | रु.100 प्रति किलो |
| **कुल आय (प्रति वर्ष)** | रु.200,000 | रु.250,000 | रु.300,000 | रु.300,000 | रु.300,000 |
| **कुल आय (5 साल)** | **रु.1,350,000** | | | | |
| **कुल खर्चे (5 साल)** | **रु.273,000** | | | | |
| **शुद्ध आय/ नफ़ा (5 साल)** | **रु.1,077,000** | | | | |

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

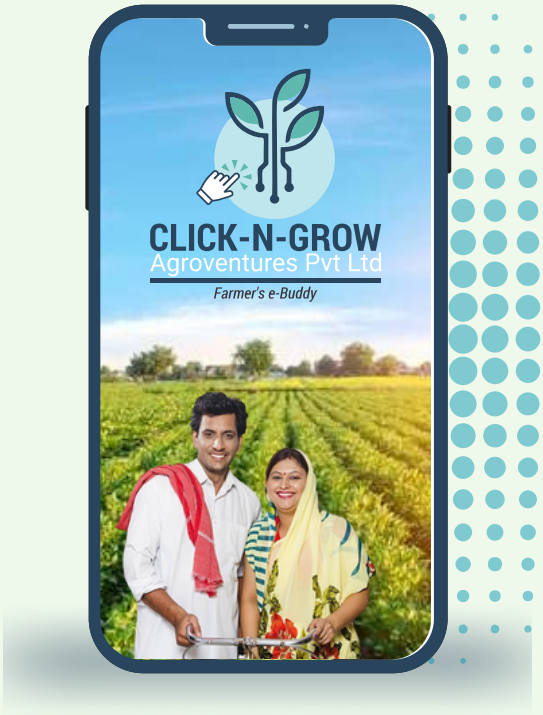


# CLICK-N-GROW AGROVENTURES PVT. LTD.

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

eKisanZone Farmer's e-Buddy | MITCAD | Contract Farming | KisanSAT AGRO ADVISORY SERVICES | Agri Export Grow Farmer, Grow india

**INTERLINKED FARM SOLUTIONS AT ONE PLACE**

## CONTACT DETAILS

**Corporate Office Maharashtra**
C/17-18, Dakshata Nagar Complex, Opp New SP Office, Sindhi Camp, Akola, Maharashtra- 444001

**Ms. Karishma Srivastava**
+91-7028301210

**Mr. Bhushan Deshmukh**
+91-9096338660

**Mr. Amol Khandare**
+91-7775008660,

info@ekisanzone.com

info.clickngrow@gmail.com

ekisanzone1@gmail.com

www.ekisanzone.com

www.kisansat.com